अध्याय–2

पं० शारंगदेव जी का जीवनवृत्त

जीवनी या जीवनवृत्त का लेखन कोई आसान कार्य नहीं है, क्योंकि किसी व्यक्ति विशेष के विषय में प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर लेखन जाता है, जिस सम्पन्न करना एक कठिन कार्य है। यह कार्य तब और अधिक कठिन हो जाता है, जब लेखन किसी एतिहासिक व्यक्तित्व के विषय में हो। जीवनवृत्त द्वारा जीवन के चरित्र का चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है, जिसमें जीवन को कलात्मक ढ़ंग से वर्णित किया जाता है। किसी व्यक्ति के कार्यों का विधिवत वर्णन तथा परिचय जानने हेतु, जीवनी अनिवार्य अंग की भूमिका का निर्वाह करता है। इस क्रम में एतिहासक व्यक्तियों का जीवन–चिरत्र प्रेरणा का स्त्रोत होते है। जीवनवृत्त कई प्रकार की जानकारियों से परिपूर्ण होते है, व एतिहासिक होने पर उस महान व्यक्तित्व को श्रद्धांज्जलि स्वरूप स्मरण भी करने का कार्य करते है, तथा नवीन तथ्यों पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है। पूर्व में लिखी गयी जीवनी व चित्रणों को नया स्वरूप प्राप्त होता है। नए सिरे से तथ्यों का अध्ययन भी प्रस्तुत किया जाता है। साहित्य या लेखन का प्रत्येक खण्ड मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का ही दर्पण है। जिस कारण जीवन का वर्णन जीवनी के अर्न्तगत माना गया है। जीवनी शब्द के अर्थ का यदि विशलेषण किया जाए, जो व्यक्ति विशेष के जीवन का समग्र वर्णन ही जीवनी है। जीवनी अर्थात् जीवन, जिसमें जीवन के पहलुओं को लेखन कला के माध्यम से ह्रदय की भावनाओं के साथ वर्णित किया जाता है। इस प्रकार साहित्य कला की विधा के माध्यम से शब्दों के मनकों में पिरोकर जीवन के सभी पक्षों की माला का निर्माण होता है, जिसमें बड़ी–छोटी बातें, सुख–दुःख सभी का वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

2.1 पं० शारंगदेव जी का जीवनवृत्त

प्रस्तुत अध्याय के अर्न्तगत शोधार्थी द्वारा शोध प्रबन्ध की आवश्यकता के अनुसार पं० शारंगदेव जी का जीवनवृत्त प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। पं० शारंगदेव जी जीवनी लेखन की दृष्टि से एक व्यक्ति विशेष के वर्णन के साथ–साथ एतिहासिक वर्णन भी है, क्योंकि पं० शारंगदेव जी भारतीय संगीत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति के लेखक है तथा संगीत रत्नाकर का प्रत्येक अंग संगीत के विभिन्न पक्षों का विस्तार से वर्णन प्रस्तुत करता है। 13वीं शताब्दी

के ग्रन्थ के रूप में संगीत रत्नाकर को प्रत्येक संगीत से जुड़े विद्वानों, शिक्षकों तथा विद्यार्थी द्वारा जाना जाता है, परन्तु पं० शारंगदेव जी का निश्चित काल या समय का ज्ञान किसी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है।

प्राप्त वर्णन के अनुसार पं० शारंगदेव जी द्वारा संगीत रत्नाकर के प्रथम अध्याय स्वरविवेकाध्याय के अर्न्तगत मंगलाचरण के पश्चात् तेरह श्लोकों अर्थात् श्लोक संख्या 2 से श्लोक संख्या 14 के मध्य अपना वशं संबंधित वर्णन प्रस्तुत किया है। सर्वप्रथम पं० शारंगदेव जी द्वारा अपने वंश की महिमा का बखान करते हुए कहा है कि कश्मीर के वृषगण नामक गोत्र (वृषगण को वृष भी कहा जाता है। यह वसिष्ठ गोत्र के अर्न्तगत वर्णित है, तथा वसिष्ठ गोत्र के आर्चाय वृषगण कहे गए है। वृषगण के वंशज अस्ति नामक सांख्याचार्य हुए, जिन्हें नारदमुनि व व्यास जी के समान ही पूज्यनीय माना गया है, जिसे कल्याण करने वाला आश्रम माना गया है।) साथ ही यह भी कहा जाता है कि वैदिक ऋषियों के समूह को वृषगण कहा जाता है व ऋग्वेद के गायकों को भी वृषगण कहा जाता है।[(1)] इसके अतिरिक्त वंश की प्रसंशा करते हुए कहा है कि वंश जो यज्ञ करने वालों, धर्म को धारण करने वालों, वेदों के ज्ञान से परिपूर्ण, जो धरा पर धर्म व कल्याण को फैलाने वाले तथा जो ब्रह्मा जी के समान ब्राह्मणों के श्रेष्ठ है, उस महान कुल में सूर्य के पर्याय नाम से सुशोभित भास्कर नामक महान तेज़ वाले, जिन्होनें दक्षिण को निवास स्थान बनाने का कार्य किया जिन्हें भास्कराचार्य के नाम से जाना गया तथा जो विद्वान, पंड़ित व आयुर्वेदाचार्य थे तथा इन्हें कई विधाओं की जानकारी थी।

भास्कर जी द्वारा उत्तर भारत में चल रहे आक्रांमक गतिविधियों से क्षुब्ध होकर दक्षिण भारत की और मुख किया। भारत में विभिन्न राज्य भारत को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित करने के स्थान पर अपने–अपने राज्य को बचाने व आपसी द्वेष के कारण विदेशी आक्रमणकारियों का सहयोग कर रहे थे। उस समय भस्कर जी ने कश्मीर छोड़कर देवगिरि जो वर्तमान में महाराष्ट्र के दौलताबाद में स्थित है, उस समय देवगिरि के नरेश भिल्लम थे। भास्कर जी को भिल्लम नरेश का संरक्षण तथा राजाश्रय प्राप्त हुआ। भिल्लम नरेश यादव वंश के थे, जो कला, आयुर्वेद तथा विभिन्न विधाओं के संरक्षक थे, जिस कारण भास्कर जी को भी संरक्षण प्राप्त हुआ। भास्कर जी के पुत्र अति नम्र, बुद्धि से तीक्ष्ण व ज्ञान से सम्पन्न श्री सोढ़ल जी

(1) राघव डॉ० रांगेय/प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास/पृ०–144

थे, जो बुद्धि से कुशल, प्रायोगिक स्वभाव से सम्पन्न थे, जिन्होनें भिल्लम नरेश को अपना आराध्य स्वीकारा था तथा उनके सभी चिन्तन व क्षोभ का भी नाश करने के गुणों से युक्त थे। भिल्लम के काल से ही भास्कर जी के पुत्र सोढ़ल जी देवगिरि के यादव वंश के दरबार में श्रीकरणाग्री अर्थात् महालेखापाल के पद पर आसीन थे। भिल्लम के पश्चात् राजा जैत्रपाल के शासन में विजयस्तम्ब को स्थापित किया, तत्पशचात् सिंहण नरेश के लिए भी कार्य किया। सिंहण महान प्रतापी यशस्वी, वीर योद्धा था, जिसे प्रौढ़ प्रताप चक्रवर्ति व रायनारायण जैसी उपाधी प्राप्त थी। सिंहण द्वारा सन् 1210 ई० से सन् 1247 ई० के मध्य शासन किया गया। सिंहण नरेश के यश का वर्णन करते हुए, पं० शारंगदेव जी द्वारा कहा गया है, कि सिंहण नरेश की कान्ति इन्द्रयणी माला के समान है, राजाओं में जो श्रेष्ठ तथा अग्रणी है व सम्पूर्ण धरा पर विजय होन वाले सिंहण नरेश महान प्रतापी, पराक्रमी है, जिनसे उनके शत्रु भी जलते है। साथ ही वर्णित करते हुए कहा है कि सिंहण नरेश गुणों के अनुरागी थे व स्वंय भी गुणों से सम्पन्न था तथा कलाओं और विधाओं को भी संरक्षण प्रदान करते थे तथा सोढल जी द्वारा सिंहण नरेश को अपना सब कुछ समर्पित कर दिया गया।

पं० शारंगदेव जी की प्रसंशा इस प्रकार प्राप्त होती है कि जो क्षीरसागर तथा चन्द्रमा के समान रूपवान है, उन्हें पं० शारंगदेव कहा गया है तथा जो उदरता की शीतल किरणों से युक्त है, जिसने अपनी सेवा के द्वारा अपने गुरूओं को व देवताओं को सेवा द्वारा प्रसन्न किया, समस्त शास्त्रों को एकत्र कर संग्रहित कर सभी विद्वानों को नमन किया, जिसकी संसार में कीर्ति तथा कान्ति चारों ओर फैली है, जो सुन्दर, विवेक से परिपूर्ण उन्हें पं० शारंगदेव जी के नाम से जाना गया। जिसके समीप स्वंय सरस्वती अपनी विद्या देकर विश्राम करने लगी अर्थात् ऐसा माना जाता है कि लगभग सभी कलाओं का उद्गम स्थान कश्मीर है, जिसका कारण अधिकतर ग्रन्थों की रचना उत्तर भारत में ही होने के तथ्य प्राप्त होते है, इन्हीं विधाओं व कलाओं के ग्रन्थों को सरस्वती के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिन्हें एकत्र कर पं० शारंगदेव जी द्वारा इन्हें संरक्षित किया गया। आमोद–प्रमोद से परिपूर्ण रस के भावों के जानकार, भाग्य के धनी, चातुर्य सभी विधाओं के धनी, व आयुर्वेद के जानकारी जो समस्त जनों के रोगों का नाश करने की प्रबल इच्छा से पूर्ण थे। उदारता की भावनाओं से भरे हुए, पं० शारंगदेव जी को तीनों लोकों के तीनों कालों का नाश करने वाले, शाश्वत तथा मोक्ष को प्राप्त करने के उद्देश्य से संगीत रत्नाकर की रचना की।

इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम अध्याय के प्रथम प्रकरण के मंगलाचरण के श्लोक के पश्चात् श्लोक दो से श्लोक चौदाह के मध्य पं० शारंगदेव जी द्वारा संगीत रत्नाकर में इन श्लोकों को काव्यत्मक सौन्दर्य से सुसज्जित कर प्रस्तुत किया है।

इसके अतिरिक्त शोधार्थी द्वारा जब संगीत रत्नाकर के काल को जानने का प्रयास हेतु, 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' तथा 'संगीत दक्षिण भारत का इतिहास' जैसी पुस्तकों का अध्ययन किया गया, तो उसमें देवगिरि के यादव राजवंश के ऐतिहासिक तथ्यों से 1210 ई० से 1247 ई० के मध्य सिंहण के शासनकाल का अध्ययन किया गया, जिस कारण शोधार्थी के मन–मस्तिष्क में कई प्रकार के प्रश्नों का जन्म हुआ, कि सिंहण शासन–प्रिय, साहित्य, संगीत तथा कला को संरक्षण प्रदान करने वाला शासक था, जिसके संरक्षण में संगीत रत्नाकर की रचना हुई और संगीत रत्नाकर जैसे महान तथा वर्तमान संगीत के आधार ग्रंथ की रचना हुई। सिंहण के द्वारा स्वयं भी संगीत रत्नाकर की टीका की गई। सिंहण के दरबारी रत्नों को सारस्वत रत्न नाम से संबोधित किया जाता था। इस सारस्वत रत्नों में शारंगदेव ,छंगदेव तथा अनंतदेव के नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है।

छंगदेव द्वारा अपने पितामाह भास्कराचार्य जी, जो सिद्धांत शिरोमणि तथा लीलावती के लेखक है तथा भारत के महान गणितज्ञ के नाम से वर्तमान में सम्मान के साथ याद किया जाता है, कि स्मृति में गुजरात के खानदेश के निकट पाटन में ज्योतिष विद्यालय का निर्माण कराया गया। पाटन चालीसगांव नामक स्थान खानदेश में स्थित है, जो वर्तमान में महाराष्ट्र के अंतर्गत आता है। इस प्रकार अनंतदेव द्वारा वृहज्जातक नामक ग्रंथ पर टीका की रचना की, जो ज्योतिष वारहमिहिर की रचना है तथा ब्रह्मगुप्त की ब्रह्मस्फुट सिद्धांत के एक अध्याय पर टीका की रचना की।[(2)] इस प्रकार देवगिरि का यादव राजवंश नामक अध्याय से प्रस्तुत तथ्य प्राप्त होते है, परंतु इसमें विचारणीय तथ्य नामों की समानता है, पं० शारंगादेव, छंगदेव, तथा अनंतदेव तीनों महान विद्वानों के नामों की समानता इस प्रश्न को जन्म देता है, कि क्या यह सभी आपस में किसी प्रकार से संबंधित है, यदि सारस्वत रत्नों को 'देव' नाम की उपाधि द्वारा सम्मानित किया जाता था, तो इससे पूर्व भास्कर जी जो आयुर्वेदाचार्य थे और भिल्लम के आमंत्रण पर ही कश्मीर से दक्षिण भारत आए थे, तथा उनके पुत्र श्री सोढ़ल को यह 'देव'

(2) दुबे डॉ० हरि नारायण / दक्षिण भारत का इतिहास / पृ०–300–301

नामक उपाधियां सम्मान में क्यों नहीं प्रदान की गयी, क्योंकि समान नाम के तीन व्यक्ति का एक साथ एक ही दरबार में होना मात्र संयोग नहीं समजा सकता।

इसके अतिरिक्त एक मत यह भी सामने आता है कि पं० शारंगदेव तथा छंगदेव दोनों के पिता एक ही नाम के कैसे? क्योंकि दोनों के ही पितामह का नाम भास्कर है। यदि छंगदेव तथा शारंगदेव जी के पितामह एक ही है, तो सिद्धांत शिरोमणि के लेखक व भारत के महान गणितज्ञ श्री भास्कराचार्य जी पं० शारंगदेव के पितामह है, इन सभी तथ्यों के पूर्ण साक्ष्य ना होने के कारण यह मात्र संभावना ही मानी जा सकती है, कि भास्कराचार्य के पूर्वज कश्मीर से दक्षिण भारत आए हो और दक्षिण के निवासी हो गए हो, क्योंकि ग्रंथकार द्वारा जो प्रशंसा वर्णन भास्कर जी के सम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है, वह उनकी महानता की महिमा का बखान प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष– इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय को शोधार्थी द्वारा संगीत रत्नाकर का अध्ययन विभिन्न मतों व तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, लिखने का प्रयास किया है। किसी जीवनी का लेखन एक कलात्मक कार्य है, क्योंकि जीवन का वर्णन या किसी व्यक्ति विशेष के विषय में चर्चा करना अत्यंत कठिन कार्य है। जीवनी किसी आधुनिक व्यक्ति से संबंधित हो या ऐतिहासिक व्यक्ति के संदर्भ में लेखन के कार्य को अत्यंत ध्यानपूर्वक ढंग से तथा सावधानी से किया जाता है। पं० शारंगदेव जी के विषय में लिखने के पूर्व शोधार्थी द्वारा तथ्यों का अध्ययन कई प्रकार से करने का प्रयास किया गया है, जिसमें पं० शारंगदेव जी वर्णित श्लोक जो संगीत रत्नाकर में वर्णित है अर्थात वंश का वर्णन किया गया है, उसे आधार बनाकर अध्याय को प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा अध्ययन से प्राप्त हुए तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें पूर्ण रूप से या निश्चित रूप से नहीं कहा गया है, यह मात्र सम्भावना है तथा जिस पर भविष्य में शोध–कार्य संभव है।

****